बळीराम पाटील कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय किनवट. जि. नांदेड

सुस्वागतम

भाषा की परिभाषाएँ, विशेषताएँ,

प्रस्तावना :-

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। जिस प्रकार वह अपने विचार दूसरों को सुनाना चाहता है, उसी प्रकार दूसरों के विचार सुनना भी चाहता है। आत्माभिव्यक्ति की यह इच्छा मनुष्य की स्वाभाविक इच्छा है। आत्माभिव्यक्ति की इस इच्छा (Desire of Self expression) ने ही भाषा को जन्म दिया है। मनुष्य के विचारविनिमय के अनेक साधनों में 'भाषा' एक महत्वपूर्ण साधन है। इस भाषा के व्यापक एवं सीमित अर्थ कौनसे हैं? भाषा की कौनसी महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं? किन-किन विद्वानों ने भाषा को परिभाषाबद्ध करने की कोशिश की है? भाषा की सबसे व्यापक परिभाषा कौनसी है? आदि प्रश्नों के संदर्भ में हम प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करेंगे।

विषय-विवेचन

अब हम क्रमशः भाषा की परिभाषाएँ, विशेषताएँ का अध्ययन करेंगे।

1.अर्थ:-

भाषा के इस अर्थ में वे सभी साधन आ जाएंगे, जिनके द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है। इन साधनों को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है- स्पर्श ग्राहय, नेत्रग्राहय तथा श्रवणग्राहय।

I.स्पर्श संकेतो:-

इसके अंतर्गत वे साधन आते है, जिनके द्वारा मनुष्य विचार-विनिमय करते समय स्पर्श का सहारा लेता है। जैसे - पुलिस का खतरा होने पर एक चोर दूसरे का हाथ दबाकर, बिना बोले ही, उस खतरे का संदेश उसे है। इस प्रकार स्पर्श से ही वे आपस में विचार-विनिमय कर लेते हैं।

2.नेत्र संकेतो:-

इस वर्ग के अंतर्गत वे साधन आते हैं, जिनके द्वारा व्यक्त विचार-विनिमय करते मनुष्य संकेतो का सहारा लेता है। इन संकेतों के द्वारा एक मनुष्य दूसरे तक अपनी बात पहुँचा देता है। चूँकि इन संकेतों का ग्रहण नेत्र करते हैं, इनको नेत्र ग्राहय साधन कहा जाता है। स्काऊटों का परस्पर झंडियों के द्वारा विचार-विनिमय करना अथवा रेल्वे गार्ड का हरी-लाल झंडी हिलाकर गाडी के चलने व रुकने का संकेत देना, विचार-विनिमय के नेत्र-ग्राहय साधन हैं।

3.श्रवण संकेतो:-

श्रवण ग्राहय वर्ग के अंदर वे समस्त ध्वनियाँ आ जाती हैं, जिनके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को व्यक्त करता है। चुटकी बजाकर किसी को बुलाना या डाक घर के तार बाबू का गर-गिट ध्वनि के द्वरा संदेश को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजना, विचार-विनिमय के श्रवण ग्राहय साधन है।

* भाषा की परिभाषाएँ:

'भाषा' शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातु से बना है। 'भाष्' शब्द का अर्थ है 'बोलना' या 'कहना'। अर्थात भाषा वह है, जिसे बोला जाए।

प्रसिद्ध वैयाकरण पतंजलि ने अपने 'महाभाष्य' में भाषा के अर्थ को इस प्रकार स्पष्ट किया है -

'व्यक्ता वाचि वर्णा येषां त इये व्यक्त वाचः।'

अर्थात "जो वाणी वर्णों में व्यक्त होती है, उसे भाषा कहते हैं।"

हिंदी के अनेक भाषा वैज्ञानिकों ने भी विविध रुप से भाषा को परिभाषित करने का प्रयास किया है ।.***भारतीय परिभाषाएं:-***

1) पं. कामता प्रसाद गुरु:

"भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली-भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टतया समझ सकता है।"

2) डॉ. देवेंद्रनाथ शर्मा:

"जिसकी सहायता से मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय या सहयोग करते है,

4) डॉ. श्यामसुंदर दास

"मनुष्य और मनुष्यों के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने के लिए व्यक्ति ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं।

5) डॉ. भोलानाथ तिवारी :

"भाषा ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा किसी भाषा समाज के लोग आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते है।"

2 . भाषा की परिभाषाएँ: पाश्चात्य -

1) प्लेटो :

'सोफिस्ट' में विचार और भाषा के संबंध में लिखते हुए प्लेटो ने कहा है कि विचार और भाषा में थोडा ही अंतर है। "विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है, पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है, तो उसे भाषा की संज्ञा देते है।"

2) स्वीट :

"ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।"

भाषा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (विशेषताएँ) इस प्रकार है।

1) भाषा पैतृक संपत्ति नहीं है।

2) भाषा अर्जित संपत्ति है।

3) भाषा सामाजिक वस्तु है।

4) भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है।

5) भाषा चिर परिवर्तनशील है।

6)भाषा व्यकितगत संपत्ति नहीं है।

7) भाषा सर्वव्यापक होती है।

8) भाषा सामाजिक स्तर पर आधारित होती है

9)भाषा सतत प्रवाहमयी होती है।

10) भाषा संप्रेषण मुल्ता: वाचिक है।

11) भाषा कठिनता से सरलता की ओर अग्रसर होती है।

12) भाषा का प्रारंभिक रुप उच्चारित होता है।

13) भाषा संयोगावस्था से वियोगावस्था की ओर जाती है।

14) भाषा का आरंभ वाकय से हुआ है।

धन्यवाद